अजीत प्रताप सिंह 'कुंवर'

पानी है अनमोल जगत में, यह सबको समझाएं,
मची हुई है त्राहि-त्राहि अब, पानी चलो बचाएं।
पानी तत्व प्रकृति का अनुपम, यह दुर्लभ उपहार है,
इसकी महिमा अकथनीय है, यह जीवन का सार है।
वर्षा जल को भण्डारित कर, जल भण्डार बढ़ाएं,
मची हुई है त्राहि-त्राहि अब, पानी चलो बचाएं।
रंगहीन व गंधहीन अरू, स्वादहीन होता पानी,
हर रस व व्यंजन से न्यारा, स्वाद लिए होता पानी।
जीवों के जीवन पर छाया, संकट चलो हटाएं,
मची हुई है त्राहि-त्राहि अब, पानी चलो बचाएं।
हर वर्षा में प्रकृति हमें, देती है जल उपहार में,
हमें चाहिए इसे सहेजें, धरती के भण्डार में।
आमद से कम व्यय करने की, अब आदत अपनाएं,
मची हुई है त्राहि-त्राहि अब, पानी चलो बचाएं।
पर्यावरण प्रदूषण बढ़ता जंगल घटते जाते हैं,
नलकूपों की होड़ लगाकर भूजल सभी घटाते हैं।
जलसंरक्षण के प्रयास कर, भूजल और बढ़ाएं,
मची हुई है त्राहि-त्राहि अब, पानी चलो बचाएं।
कर लें गहरीकरण सफाई, सब मिल नदियां नालों का,
गर्मी में निर्माण करा लें, नये कुंओं या तालों का।
वर्षा की हर एक बूँद को, ले संकल्प बचाएं,
मची हुई है त्राहि-त्राहि अब, पानी चलो बचाएं।
ग्रीष्म ऋतु में नदी व नाले, ताल सभी दिखते सूखे,
भटक रहे हैं जीव-जन्तु सब, इधर-उधर प्यासे भूखे।
जल का अपव्यय रोक चलो, जीवों की प्यास बुझाएं,
मची हुई है त्राहि-त्राहि अब, पानी चलो बचाएं।
फिर लौटेंगे पानी के दिन, सब हिम्मत से काम लें,
संकट की इस विषम घड़ी में, हाथ सभी के थाम लें।
पानी के खातिर आपस में, लड़ें न खून बहाएं,
मची हुई है त्राहि-त्राहि अब, पानी चलो बचाएं।

कहाँ गया धरती का पानी, कहाँ गये नदियाँ और नाले,
कहाँ गया पावन गंगाजल, कहाँ गये हैं रखवाले।
तरस रहे अब जीव-जन्तु क्यों, बूँद-बूँद इस पानी को,
क्यों बहती हैं खून की नदियाँ, पाने खातिर पानी को।
बढ़ता जाता ताप हर वर्ष, मौसम रूखा-रूखा है,
कहीं-कहीं पर बाढ़ आ रही, कहीं-कहीं पर सूखा है।
वर्षा जल को रोक न पाते, बह जाता जलधानी को,
क्यों बहती हैं खून की नदियाँ, पाने खातिर पानी को।
तालाबों को पाट-पाट कर, नये नगर नित उगते हैं,
जंगल और पहाड़ काटकर, कल-कारखाने लगते हैं।
धरती की छाती छलनी कर, चूस रहे हैं पानी को,
क्यों बहती हैं खून की नदियाँ, पाने खातिर पानी को।
काट-काट कर मेड़ कृषक अब, अपने खेत बढ़ाते हैं,
संचित न करते हैं पानी, नाहक उसे बहाते हैं।
लगी सूखने फसलें जब भी, कोस रहे भगवानी को,
क्यों बहती हैं खून की नदियाँ, पाने खतिर पानी को।
नलकूपों का संचित पानी, जितना बाहर आता है,
वर्षा ऋतु में वर्षा का जल, उतना न भर पाता है।
जमा से ज्यादा खर्च की बन गई, आदत अब इस प्राणी को,
क्यों बहती हैं खून की नदियाँ, पाने खातिर पानी को।
मानव की मनमानी से, परितन्त्र समूचा बिगड़ा है,
एकाकी विकास की धुन में, मानव कितना जकड़ा है।
पूंजी वाले पैसों के दम पर, करते मनमानी को,
क्यों बहती हैं खून की नदियाँ, पाने खातिर पानी को।
सूख गये हैं कुँआ ताल अरू, सूख गये नदियाँ नाले,
सूख गये हैं वन उपवन भी, हरे हैं काले दिल वाले।
दूध की दर पर पानी बेचें, कमा रहे बेमानी को,
क्यों बहती हैं खून की नदियाँ, पाने खातिर पानी को।
यूं ही कटते रहे जो जंगल, बढ़ता रहा धुंआ यूं ही,
यूं ही ताप रहा जो बढ़ता, वर्षा जल बहा अगर यूं ही।
पिघल जायेगी बर्फ ध्रुवों की, पृथ्वी पानी-पानी हो,
क्यों बहती हैं खून की नदियाँ, पाने खातिर पानी को।

संपर्क सूत्र :
श्री अजीत प्रताप सिंह 'कुंवर', इन्द्रा नगर, नागौद, जिला-सतना 485 446 (म.प्र.) [मो. : 08959501378]